ST. MARY'S SCHOOL (ICSE), MAZAGAON

PRELIMINARY EXAMINATION

Meexampapers.com

Class: 10 **Date: 11/01/08** **Sub: Hindi** **Time: 3:00 hrs.** **Marks: 80**

Section: A

भाषा

प्रश्न १. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग २५० शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए– (१५)

१) विकास ने जहाँ एक ओर मनुष्य के जीवन को सरल तथा सुविधाजनक बना दिया है वहीं दूसरी ओर विकास के कई दुष्परिणाम भी हमारे सामने आए हैं। वे दुष्परिणाम क्या हैं तथा उनसे कैसे बचा जा सकता है इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

२) "शिक्षा व शिक्षक का व्यक्ति के जीवन में महत्व," इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

३) आज का युग विज्ञापन युग है। आज विज्ञापन समाज को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं; इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

४) एक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो -
"आलस्य मानव का महान शत्रु है"

५) नीचे दिए गये चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए और चित्र को आधार बनाकर वर्णन कीजिए अथवा कहानी लिखिए जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।

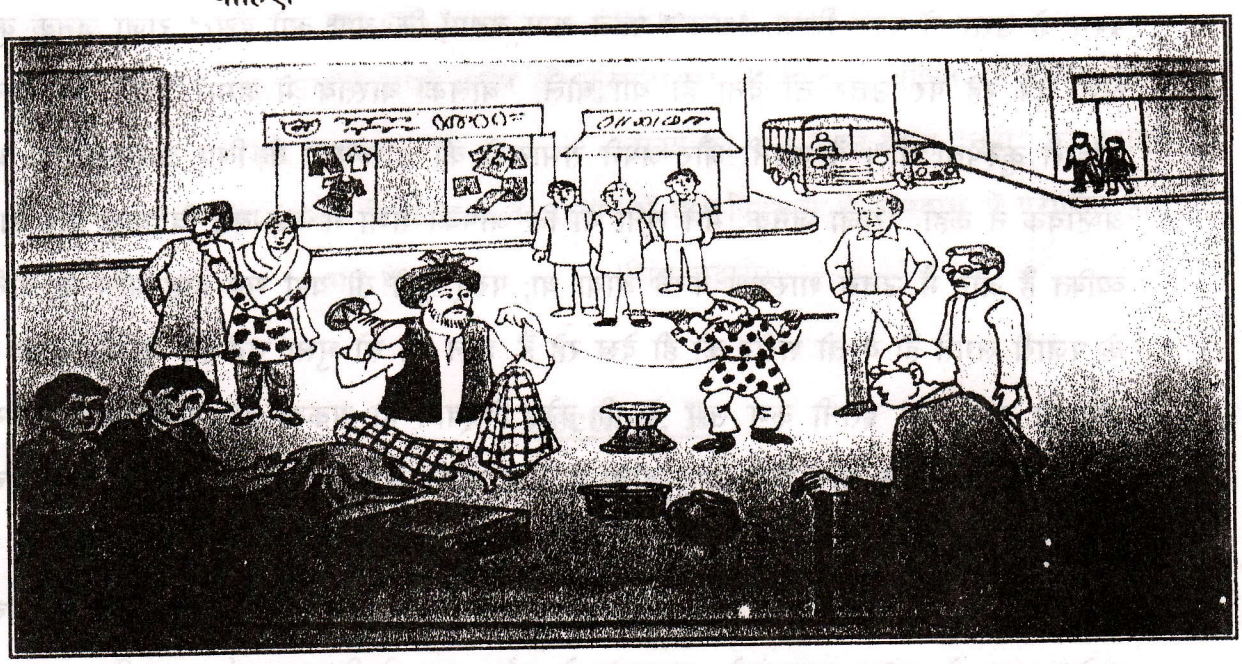

प्रश्न २. किसी एक विषय पर लगभग १२० शब्दों में पत्र लिखिए– (७)

१) छात्रावास में रहने वाले अपने छोटे भाई को यह समझाते हुए पत्र लिखिए कि खान-पान की गलत आदतें किस प्रकार स्वास्थ्य को प्रभावित करती है तथा उसे उचित आहार लेने के लिए प्रेरित कीजिए।

२) आपके घर के बाहर की सड़क पर दिन में भी बिजली जलती रहती है, इस बात की शिकायत करते हुए बिजली प्राधिकरण के अध्यक्ष को पत्र लिखिए।

प्रश्न ३. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए।

प्राचीन काल में अष्टावक्र नाम के महर्षि हुए जो अत्यंत विद्वान और ज्ञानी थे। अष्टावक्र शरीर से विकलांग और आठ अंगों से टेढ़े थे। वे ठीक तरह से चल भी न सकते थे। उनकी कुरुपता को देख सब उनपर हँसते थे। कहते हैं कि किसी शाप के कारण ही उनका जन्म इस रुप में हुआ और नाम मिला-अष्टावक्र। अपनी कुरुपता और विकलांगता को अष्टावक्र ने कभी अपने मार्ग की बाधा नहीं बनने दिया। वे मानते थे कि शरीर से बड़ी आत्मा है। शरीर भले ही टेढ़ा मेढ़ा हो परन्तु आत्मा सुन्दर और शुद्ध होनी चाहिए। अष्टावक्र में विद्या प्राप्ति की लालसा थी। बारह वर्ष की उम्र तक तो वह महान विद्वान बन गए थे। एक बार अपने पिता के बारे में पूछते हुए उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके पिता को राजा जनक के दरबार में एक विद्वान से शास्त्रार्थ में पराजित होने के कारण अपमानित होना पड़ा था। बस! अष्टावक्र ने उसी समय निश्चय किया कि वे राजा जनक के दरबार में जाकर उस विद्वान से शास्त्रार्थ करेंगे और उसे हरा देंगे। वे जैसे ही राजा के सम्मुख पहुँचे कि सभी सभासद जोर-जोर से हँसने लगे। यहाँ तक कि राजा जनक भी अपनी हँसी पर नियंत्रण न कर पाए। अष्टावक्र ने जोर का ठहाका मारा। सभासदों की हँसी की आवाज उस ठहाके से दब गई। सभी स्तब्ध रह गए। राजा जनक अचंभित थे। उनसे रहा न गया। पूछा, "बालक! तुम इतनी जोर से क्यों हँसे?" अष्टावक्र ने प्रश्न के उत्तर में पश्न किया, "राजन! पहले आप बताएँ कि आप क्यों हँसे?" राजा जनक कुछ क्षण चुप रहे पर उत्तर तो देना ही था। बोले, "बालक! वास्तव में हमारे हँसने का कारण तुम्हारी कुरुपता थी"। मैं अपनी और अपने सभासदों की अशिष्टता के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। अब अष्टावक्र ने कहा, "राजा जनक, मैंने सुना था कि आपकी सभा में बड़े-बड़े विद्वान और ज्ञानी व्यक्ति हैं और मैं उनसे शास्त्रार्थ करने आया था; परंतु मुझे तो यहाँ सब हाड़-माँस के, शरीर के पुजारी लगते हैं। ये तो शरीर को ही देख रहे हैं, ज्ञान को तो भुला चुके हैं।" राजा जनक को आश्चर्य हुआ, क्या इतनी कम उम्र में भी कोई विद्वान हो सकता है? उन्होंने प्रश्न किया, "मुझे यह बताएँ कि ज्ञान कैसे प्राप्त होता है और मुक्ति कैसे मिलती है?" अष्टावक्र ने उत्तर दिया- "राजन, यदि ज्ञान चाहते हो तो अहंकार त्यागकर सबसे सीखो और मुक्ति चाहते हो तो भोग को विष के समान त्याग दो। क्षमा, दया, संतोष, सत्य और सरलता को हृदय में धारण करो।" राजा ने अनेक प्रश्न पूछे। अष्टावक्र ने शाँत भाव से विद्वतापूर्ण उत्तर दिए। अनुमति मिलने पर उन्होंने सभापंडित से शास्त्रार्थ किया और उसे हरा दिया। अष्टावक्र ने अपनी पूरी आयु ज्ञान की आराधना की। उन्होंने अपने शरीर को अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति पर कभी हावी नहीं होने दिया।

१) अष्टावक्र कौन थे? उनको अष्टावक्र क्यों कहते थे? (२)

२) अष्टावक्र किस उद्देश्य से राजा जनक के दरबार में शास्त्रार्थ

करने के लिए गये थे? (२)

३) अष्टावक को देखते ही सभासदों और राजा जनक की हँसी क्यों छूट गई?(२)

४) राजा जनक व्दारा अष्टावक से ज्ञान और मुक्ति की विधि पूछे जाने पर अष्टावक ने क्या कहा? (२)

५) अष्टावक के किन गुणों के कारण उसे ज्ञानी माना गया? (२)

प्रश्न ४. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए।

१) निम्न शब्दों से विशेषण बनाइये - (१)

(शाप, नियंत्रण)

२) भाववाचक संज्ञा बनाइये- (१)

(पराजित, पुजारी)

३) पर्यायवाची शब्द लिखिए- (१)

(आराधना)

४) विपरीत शब्द लिखिए- (१)

(विद्या, कुरुपता)

५) किसी एक मुहावरे से वाक्य बनाइये- (१)

(भीगी बिल्ली बनना, आग में घी डालना)

६) कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए- (३)

(क) राजा जनक के दरबार में जाकर उस विद्वान से शास्त्रार्थ करेंगे और उसे हरा देंगे। (भूतकाल में बदलिए)

(ख) उन्होंने अपने शरीर की कुरुपता का अपनी इच्छा शक्ति पर प्रभाव नहीं पड़ने दिया। (वाक्य का अर्थ बदले बिना "नहीं" को हटाइये)

(ग) उनके पिता राजा के दरबार में एक विद्वान से शास्त्रार्थ में पराजित हो गए थे। (लिंग बदलो)

Section: B

साहित्य

निर्देश : प्रत्येक पुस्तक में से एक सन्दर्भ अनिवार्य है। कुल मिलाकर चार सन्दर्भ कीजिए।

काव्य – चन्द्रिका

प्रश्न ५. अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खडे,
समक्ष ही स्वबाहू जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
सभी अमर्त्य - अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।

रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

(*मनवता - मैथिलीशरण गुप्त*)

१) कवि ने 'समर्थ भाव' किसे कहा है? कविता के सन्दर्भ में समझा कर लिखिए। (२)

२) कवि ने पशु प्रवृति किसे कहा है और क्यों? २)

३) उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थ समझाते हुए लिखिए। (३)

४) कवि ने किन उदाहरणों व्दारा मानव को परोपकार करने के लिए प्रेरित किया है? (३)

प्रश्न ६. नाश के दुख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख,
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नवगान फिर-फिर,
नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
सृष्टि का आह्वान फिर-फिर।

(*निर्माण - हरिवंश राय बच्चन*)

१) कवि का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (२)

२) अर्थ लिखिए। (२)
विहंगम, भीत, भूधर, विटप।

३) 'प्राची' शब्द का क्या अर्थ है? कविता में इस शब्द का प्रयोग कहाँ किया गया है? समझा कर लिखिए। (३)

४) उपर्युक्त पंक्तियों का भाव समझाते हुए कविता के केन्द्रीय भाव पर प्रकाश डालिए। (३)

प्रश्न ७. रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उसको स्वर्ग, धीर!
पर, फिरा हमें गांडीव - गदा,
लौटा दे अर्जुन - भीम वीर!

(*हिमालय - रामधारी सिंह दिनकर*)

१) उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए। (२)

२) हिमालय को किन विशेषणों से सम्बोधित किया गया है? (२)

३) कविता के केन्द्रीय भाव पर प्रकाश डालिए। (३)

४) हिमालय का महत्त्व, भारत के लिए क्या है? समझा कर लिखिए। (३)

कथा मंजूषा

प्रश्न ८. "पर लछमा के जीवन को मैंने इसका अपवाद ही पाया"

(लछमा - महादेवी वर्मा)

१) लेखिका ने लछमा के जीवन को किसका अपवाद पाया? (२)

२) लेखिका लछमा को अपना मित्र क्यों समझती थी? (२)

३) 'उसके पास भाग्य की कमी है, समझ की नहीं,' लछमा के विषय में यह कथन कितना सही है समझा कर लिखिये। (३)

४) लछमा ने किस महाभारत के सूत्रपात को रोका और कैसे? (३)

प्रश्न ९. "उसे देखकर रहमत काबूली पहले तो सकपका गया; पहले जैसी बातचीत करते उससे न बना।"

(काबुलीवाला - रवीन्द्रनाथ टैगोर)

१) रहमत काबूली का परिचय दीजिए। (२)

२) वह किसे देखकर क्यों सकपका गया? समझा कर लिखिए। (२)

३) "एक अपूर्व मंगल-प्रकाश से हमारा वह शुभ उत्सव उज्जवल हो उठा", इस कथन का तात्पर्य समझा कर लिखिए। (३)

४) "काबुलीवाला" रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक अमर रचना है। इस कथन पर अपने विचार प्रकट कीजिए। (३)

प्रश्न १०. "मेरी तबियत ठीक नहीं - माफ कीजिए; तबियत अच्छी होती तो हुकुम सिर आँखों पर।"

(गोशाला - रामवृक्ष बेनीपुरी)

१) इस कथन के वक्ता और श्रोता कौन हैं? सन्दर्भ समझाकर लिखिए। (२)

२) वक्ता बुढ़ापे में भीख माँगने पर मजबूर क्यों हो गया? (२)

३) वक्ता का चरित्र चित्रण कीजिए। (३)

४) इस कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिध्द कीजिए। (३)